214hi05

5

अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं

जैसा कि आप जानते हैं, हमारी आवश्यकताएं अनन्त है परन्तु उनकी पूर्ति करने के संसाधन सीमित हैं। विभिन्न आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये हमें भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु संसाधनों की दुर्लभता के कारण, हम अर्थव्यवस्था में सभी के लिये एक साथ और सभी भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन नही कर सकते। दुर्लभता के कारण ही, हम संसाधनों को नष्ट भी नहीं होने दे सकते। इसलिये प्रत्येक अर्थव्यवस्था को इन समस्याओं के हल ढूँढने चाहिये।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- चयन करने की आवश्यकता के बारे में समझ पायेंगे;
- दुर्लभ संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग को जान पायेंगे;
- अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं से परिचित हो पायेंगे;
- विभिन्न प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में संसाधनों के आबंटन को समझ पायेंगे;
- अर्थव्यवस्था की संवृद्धि तथा संसाधनों की संवृद्धि में सम्बन्ध की व्याख्या कर सकेंगे।

5.1 दुर्लभता तथा चयन

मान लीजिये, आप एक कमीज, पुस्तक तथा अपने मित्र के लिए एक उपहार क्रय करना चाहते हैं। आप सिनेमा हाल में चलचित्र भी देखना चाहते है। ऐसी अनेक आवश्यकताएं हैं जिनकी आपको तुष्टि करनी है। लेकिन आपके पास केवल 110 रु. हैं। मान लें कि एक कमीज 150 रु. में पुस्तक 95 रु. में उपलब्ध है, उपहार की कीमत 90 रु. है तथा चलचित्र की टिकट 100 रु. में खरीदी जा सकती है। इस प्रकार इन सभी वस्तुओं की कीमत कुल मिलाकर 435 रु. है जो आपके पास नहीं हैं। स्पष्ट रूप से, आप सभी वस्तुओं को नहीं खरीद सकते क्योंकि आपके पास सीमित मुद्रा अथवा संसाधन हैं। आप क्या करेंगे? 110 रु. में आप एक कमीज नहीं खरीद सकते क्योंकि इसकी कीमत जो मुद्रा आपके पास है, उससे अधिक है। लेकिन आप या तो पुस्तक अथवा उपहार अथवा चलचित्र का टिकट खरीदने पर विचार कर सकते हैं। यहां आपको चयन करना पड़ेगा कि इनमें से कौन सी एक वस्तु आप खरीदना चाहते हैं।

चयन की समस्या क्यों उत्पन्न होती है? यदि आपके पास एक जादू की छड़ी अथवा जादू का चिराग होता तो आप के पास अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये सब कुछ हो सकता था और चयन करने की समस्या भी उत्पन्न नहीं होती। यह एक कल्पित स्थिति है जो कभी नहीं हो सकती। आपके पास 110 रु. है, 435 रु. नहीं जिसका अर्थ है कि आपके पास संसाधन (इस स्थिति में मुद्रा) सीमित अथवा दुर्लभ हैं। क्योंकि आप अपने दुर्लभ संसाधन से केवल एक वस्तु ही खरीद सकते हैं, आप इस समस्या का सामना करते हैं कि अपनी आवश्यकता की तुष्टि के लिये यथार्थ में आपको कौन सी वस्तु खरीदनी है। जब आप चयन करते हैं कि आपको कौन सी वस्तु खरीदनी है तो एक अन्य महत्वपूर्ण बात पर भी ध्यान दीजिये। वह है, संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग संभव है। कैसे? यदि आप इन सभी वस्तुओं को नहीं भी खरीद पाते हैं, आप पुस्तक अथवा उपहार अथवा चलचित्र की टिकट तो खरीद ही सकते हैं। इस प्रकार, संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं।

इसी प्रकार, अर्थव्यवस्था को यह भी निश्चय करना है कि किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए तथा संसाधनों को किस प्रकार प्रयोग किया जाए। अतः चयन की समस्या उत्पन्न होती है क्योंकि (क) संसाधन सीमित हैं तथा (ख) संसाधनों के अनेक वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. निम्नलिखित वस्तुओं के वैकल्पिक प्रयोग क्या हो सकते हैं?

   (अ) बस　　(ब) कमरा

   (स) भवन　　(स) कम्प्यूटर

5.2 अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं

हम तीन मुख्य समस्याओं की सूची बना सकते हैं जिनका किसी अर्थव्यवस्था को सामना करना पड़ता है। ये हैं:

1. संसाधनों के आबंटन की समस्या
2. संसाधनों के उपयोग की समस्या
3. संसाधनों में संवृद्धि की समस्या

5.2.1 संसाधनों का आबंटन

किसी अर्थव्यवस्था को तीन आधारभूत आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

1. किन वस्तुओं तथा सेवाओं का तथा कितनी मात्राओं में उत्पादन किया जाए?
2. वस्तु और सेवाओं का उत्पादन कैसे किया जाए?
3. वस्तु और सेवाओं का उत्पादन किसके लिये किया जाए?

किन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए तथा कितनी मात्राओं में? प्रत्येक समाज को चयन की समान समस्या का सामना करना पड़ता है, परन्तु प्राथमिकताएं भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। अल्प-विकसित अर्थव्यवस्थाओं में, खाद्यान्नों की फसलों के उत्पादन तथा साइकिलों के विनिर्माण के बीच चयन करना पड़ सकता है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में, शापिंग माल तथा अधिक कारों के उत्पादन में चयन करना पड़ सकता है।

वस्तु और सेवाओं का उत्पादन कैसे किया जाए? यह उस विधि से सम्बन्धित है जिसके द्वारा इनका उत्पादन किया जाना है। एक बार जब यह निश्चित हो जाता है कि किन वस्तुओं का उत्पादन होना है, तो समस्या है कि उनका उत्पादन कैसे किया जाए? किन साधनों की आवश्यकता है, कितनी भूमि तथा कितने श्रमिकों की आवश्यकता है? वस्तुओं को बनाने की विभिन्न विधियां होती हैं। उदाहरण के लिये, कपड़ों का उत्पादन अधिक श्रम तथा कम मशीनें लगाकर अथवा अधिक मशीने तथा कम श्रम लगाकर किया जा सकता है। यदि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिक श्रम तथा कम पूंजी लगाकर किया जाता है तो उसे उत्पादन की **श्रम-गहन विधि** कहते हैं। जब वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिक पूंजी (मशीनें आदि) तथा कम श्रम लगाकर किया जाता है तो इसे उत्पादन की **पूंजी-गहन विधि** कहते हैं।

वस्तु और सेवाओं का उत्पादन किसके लिये किया जाए? उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग किसे करना है तथा कौन इनका लाभ प्राप्त करेगा? दुर्लभता के कारण प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की तुष्टि करना संभव नहीं है, इसलिये यह निश्चित किया जाना चाहिये कि किसकी आवश्यकताओं की तुष्टि करनी है? अर्थव्यवस्था को खाद्यान्न फसलों का अधिक उत्पादन करना चाहिये अथवा कम्प्यूटरों का? किसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए, अधिक गरीब लोगों का अथवा अधिक धनवान लोगों का? क्या कुल उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं में प्रत्येक को समान हिस्सा मिलना चाहिये, यद्यपि कुछ लोगों को दूसरों की अपेक्षा उनकी अधिक आवश्यकता है। ये सभी निर्णय समाज में आय एवं सम्पत्ति के वितरण से सम्बन्धित होते हैं।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. एक कारण दीजिये, जिससे आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होती है?
2. अर्थव्यवस्था की तीन केन्द्रीय समस्याओं के नाम लिखिये।

5.2.1.1 पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में संसाधनों का आबंटन

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है तथा वस्तु और सेवाओं का उत्पादन अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था (बाजार-अर्थव्यवस्था) में वस्तुओं तथा सेवाओं के चयन के मार्गदर्शन के लिये कोई केन्द्रीय अधिकारी नहीं होता। उत्पादन व्यक्तियों

टिप्पणी

- कृषक, विनिर्माताओं, उत्पादकों, सेवाएं प्रदान करने वाले तथा अन्य व्यक्तियों के हाथों में होता है। संसाधन जैसे भूमि, श्रम पूंजी आदि लोगों के निजी स्वामित्व में होते हैं। यह सभी व्यक्ति बाजार के लिये उत्पादन करते हैं तथा इनका मार्गदर्शन लाभ के उद्देश्य द्वारा होता है। वे केवल उन वस्तुओं का उत्पादन करते है जिनकी मांग उपभोक्ताओं द्वारा होती है। वे वस्तुओं का उत्पादन सबसे सस्ती विधियों द्वारा करते हैं ताकि वे अधिकतम लाभ कमा सकें। ये व्यक्तिगत उत्पादक उन वस्तुओं के उत्पादन से जिन्हें लोग नहीं खरीदते है अपने संसाधनों को हटाकर उन वस्तुओं के उत्पादन में लगाते हैं जिन्हें लोग खरीदना पसंद करते हैं। वस्तुएं उन लोगों के लिये होती हैं जो ऐसी वस्तुओं की मांग करते हैं तथा उन्हें खरीदने में समर्थ हैं।

राजन एक व्यवसायी है जो कमीजों का उत्पादन करता है। उसने अनुभव किया कि उसकी बहुत सारी कमीजें बिना बिकी रह जाती हैं। उसने ध्यान दिया कि युवा लड़के तथा लड़कियां आजकल टी-शर्ट पहन रहे हैं। ये युवा लोग आजकल कमीजों की अपेक्षा टी-शर्टों पर धन खर्च करने के इच्छुक हैं। क्योंकि राजन का लाभ कम होने लगा है, वह कमीजों की बजाय टी-शर्टों का उत्पादन करने का निर्णय लेता है। क्योंकि उसके संसाधन सीमित हैं, वह युवा लोगों की मांग को संतुष्ट करने के लिये अपने संसाधनों को टी-शर्टों के उत्पादन में लगा देता है। राजन 2 सिलाई की मशीनें तथा अपने सभी 10 श्रमिकों को लगाकर अब टी-शर्टों का उत्पादन कर सकता है। इस प्रक्रिया में उसे प्रत्येक टी-शर्ट की लागत 100 रु. आती है। राजन के पास दूसरा विकल्प 5 मशीनें तथा केवल 8 श्रमिक लगाकर टी-शर्ट का उत्पादन करने का है जिससे उसकी प्रति टी-शर्ट की लागत 125 रु. हो जायेगी। राजन प्रथम और सबसे सस्ती विधि का चयन करेगा क्योंकि वह टी-शर्टों के बेचने से अधिक से अधिक लाभ कमाना चाहता है। अब राजन की टी-शर्ट युवा लोगों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। उसे कमीजों के उत्पादन करने में जितना लाभ हो रहा था उसकी अपेक्षा अब वह काफी अधिक लाभ कमाता है। युवा लोग जो 100 रु. का भुगतान करने में समर्थ हैं, वे सभी राजन के द्वारा उत्पादित टी-शर्ट पहन रहे हैं।

इस प्रकार, किसी पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- केवल उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन होता है जो उपभोक्ता चाहते हैं।
- न्यूनतम प्रति इकाई लागत पर वस्तुओं की अधिकतम मात्रा का उत्पादन होता है।
- वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन उन सभी के लिये होता है जों उनके लिये भुगतान कर सकते हैं।

5.2.1.2 नियोजित आर्थिक प्रणाली में संसाधनों का आबंटन

नियोजित आर्थिक प्रणाली में, सरकार का एक केन्द्रीय आयोजन अधिकारी होता है जो क्या उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाए तथा किसके लिये उत्पादन किया

जाए का निर्णय लेता है। योजना अधिकारी उत्पादन के लक्ष्यों को निर्धारित करता है। सरकार लक्ष्यों को निर्धारित करती है तथा फर्म लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयत्न करती है। जब लक्ष्यों पर सहमति हो जाती है, तो फर्म उत्पादन आरम्भ कर देती है। यह बाजार अर्थव्यवस्थाओं की भांति नहीं होती जहां वे लोग जिनके पास धन है अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि कर सकते हैं तथा वे लोग जिनके पास धन नहीं हैं, अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिये वस्तुएं खरीदने में समर्थ नहीं होते। नियोजित प्रणाली में सरकार सभी को समान बनाना चाहती है। वह उन वस्तुओं का उत्पादन करती है जिनकी आवश्यकता सभी को होती है तथा जिनमें प्रत्येक का बराबर हिस्सा हो। ऐसा नहीं है कि जो लोग व्यय करने में समर्थ हैं उनके पास अधिक वस्तुएं हों। कम से कम सेवाओं जैसे स्वास्थ्य तथा शिक्षा, सड़कें तथा आवास के मामले में उनकी व्यय क्षमता का विचार किये बिना प्रत्येक को समान अवसर मिलने चाहिये। अतः नियोजित अर्थव्यवस्थाओं में, सरकार उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन करने का निर्णय लेती है जिनके बारे में वह सोचती है कि ये लोगों के पास होनी चाहिये, न कि लोग सोचते हैं कि वे उनके पास होनी चाहिये। इस प्रकार सरकार जनसाधारण की आवश्यकताओं की तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करती है।

क्योंकि सरकार विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन और उनकी मात्राओं का निर्धारण करती है, यह सम्भव है कि सरकार अधिक कार तथा ट्रैक्टरों का उत्पादन करे जबकि उपभोक्ता स्कूटरों की मांग करते हैं। कैसे उत्पादन किया जाए के सम्बन्ध में, केन्द्रीय नियोजन अधिकारी इतनी सारी वस्तुओं की लागत की गणना करने में समर्थ नहीं हो सकता तथा इस बात का खतरा रहता है कि संसाधनों का आदर्श ढंग से बंटबारा न हो। समाजवादी अर्थव्यवस्था लोगों की मूल आवश्यकताओं जैसे भोजन, परिधान तथा आवास की आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जाना चाहिये के आधार पर 'किसके लिये उत्पादन किया जाए' समस्या को हल करती है। प्रत्येक के साथ समान व्यवहार किया जाता है तथा किसी एक को भी दूसरे से प्राथमिकता नहीं मिलती। परन्तु यह कहा जाता है कि नियोजित आर्थिक प्रणाली संसाधनों का आबंटन अधिक आदर्श ढंग से नहीं करती क्योंकि यह लोगों के चयन तथा वरीयता पर आधारित नहीं होता। यह सरकार के निर्णय पर आधारित होता है। परन्तु यह प्रणाली सामाजिक कल्याण के सिद्धान्त पर आधारित होती है।

5.2.1.3 मिश्रित अर्थव्यवस्था में संसाधनों का आबंटन

मिश्रित अर्थव्यवस्था सरकारी नियोजन को बाजार अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ती है। विश्व में कोई भी अर्थव्यवस्था न तो पूरी तरह से केन्द्रीय नियोजित और न ही पूरी तरह से बाजार अर्थव्यवस्था है। आज अधिकतर अर्थव्यवस्थाएं मिश्रित अर्थव्यवस्थाएं है। मिश्रित आर्थिक प्रणाली में निजी क्षेत्र द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन का चयन लाभ के उद्देश्य के आधार पर निर्भर करता है। सरकार द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन का चयन लोगों की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के आधार पर निर्भर करता है।

टिप्पणी

यह उत्पादन की कार्यक्षमता को वितरण के औचित्य से जोड़ता है; सरकार के स्वामित्व में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिये वे दुर्लभ संसाधन होते हैं जिनके बारे में वे सोचते हैं कि उनके देश और लोगों को उनकी आवश्यकता है। निजी क्षेत्र में अधिक से अधिक धन कमाने के उद्देश्य से लोगों तथा फर्मों के स्वामित्व में भी कुछ दुर्लभ संसाधन होते हैं। इस प्रकार मिश्रित आर्थिक प्रणाली बाजार आर्थिक प्रणाली के लाभों को आयोजित आर्थिक प्रणाली के लाभों के साथ जोड़ने का प्रयास करती है।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. वस्तुओं और सेवओं के उत्पादन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

   (अ) बाजार अर्थव्यवस्था में

   (ब) नियोजित अर्थव्यवस्था में

2. बाजार अर्थव्यवस्था में वस्तु और सेवाओं का उत्पादन किसके लिये होता है?

हमने चर्चा की है कि कुल संसाधन सीमित होते हैं तथा संसाधन विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम होते हैं। क्या तथा कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए के निर्णय करने में, अर्थव्यवस्था को हजारों विभिन्न सम्भावित वस्तुओं में संसाधनों के आबंटन से सम्बन्धित निर्णय लेने पड़ते हैं। मान लीजिये, कि अर्थव्यवस्था केवल दो वस्तुओं गेहूँ तथा साइकिलों का उत्पादन कर रही हैं। सभी संसाधनों की सीमितता के साथ, यदि सभी संसाधनों का गेहूँ के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है तो 20 क्विंटल गेहूँ का उत्पादन हो सकता है और एक भी साइकिल का उत्पादन नहीं होगा। यदि अधिकतम संसाधनों को हटाकर साइकिल के उत्पादन में लगा दिया जाए तो गेहूँ के उत्पादन के लिये बहुत कम संसाधन ही बच पायेंगे। इसी प्रकार, यदि सभी संसाधनों को साइकिलों के उत्पादन में प्रयोग किया जा रहा है तो 100 साइकिलों का उत्पादन हो सकता है तथा गेहूँ के उत्पादन के लिये कुछ भी संसाधन नहीं बचेंगे।

सारणी 1: उत्पादन सम्भावनाएं

उत्पादन सम्भावनाएं	गेहूँ (क्विंटल)	साइकिल
अ	20	0
ब	8	30
स	5	60
द	2	75
य	0	100

उपर्युक्त सारणी दो वस्तुओं, गेहूँ तथा साइकिल के विभिन्न संयोगों की कुछ उत्पादन सम्भावनाओं के उदाहरण को प्रदर्शित करती है। केवल पांच सम्भावनाएं हैं। अनेक अन्य सम्भावनाएं हो सकती हैं। यदि गेहूँ की कुछ मात्रा का त्याग कर दिया जाए तो हम अधिक साइकिलों का उत्पादन कर सकते है; यदि कुछ साइकिलों का त्याग कर दिया जाए तो अधिक गेहूँ का उत्पादन हो सकता है। इसलिये, वैकल्पिक उत्पादन सम्भावनाओं के लिये दुर्लभ संसाधनों को विभिन्न संयोगों में लगाया जाता है।

5.2.2 संसाधनों का पूर्ण उपयोग

किसी अर्थव्यवस्था की एक अन्य समस्या संसाधनों - भूमि, श्रम तथा पूंजी के पूर्ण प्रयोग से सम्बन्धित है। आप देख चुके हैं कि गेहूँ की कुछ मात्रा का त्याग करके आपके पास अधिक साइकिलें हो सकती हैं। यदि अर्थव्यवस्था में सभी संसाधनों को पूर्ण रोजगार मिल जाए तो केवल अन्य वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करके ही किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि की जा सकती है। ऐसा तब होता है जब उत्पादन पूर्ण कुशलता से होता है। परन्तु वास्तव में, अधिकतर उत्पादन कुशलतापूर्वक नहीं होता। साधनों को पूर्ण रोजगार नहीं मिलता तथा उत्पादन अर्थव्यवस्था की सर्वश्रेष्ठ क्षमता से कम होता है। आपने देखा होगा कि आपके परिवार के कुछ सदस्य अथवा मित्र शिक्षित होने के बावजूद भी बेरोजगार हैं। इसी प्रकार, हम अपनी कृषिभूमि में आज भी वर्ष में केवल एक फसल उगाते हैं। यह अच्छा संकेत नहीं है, क्योंकि संसाधन तो पहले ही दुर्लभ हैं। यदि इन दुर्लभ संसाधनों का भी पूर्ण उपयोग नहीं किया जाता है, तो यह संसाधनों को नष्ट करना है। अतः यह सुनिश्चित करना एक अर्थव्यवस्था का कर्त्तव्य है कि दुर्लभ संसाधन बिना प्रयोग के अथवा अल्प प्रयोग में न रहें।

5.2.3 संसाधनों में संवृद्धि

यदि संसाधनों जैसे श्रम, पूंजी तथा तकनीकी में एक समय अवधि में संवृद्धि हो तो दुर्लभता की व्याख्या की जा सकती है। इस प्रकार, किसी अर्थव्यवस्था की संवृद्धि के लिये, अर्थव्यवस्था में उपलब्ध संसधानों में वृद्धि होनी चाहिये। संसाधनों के प्रभावशाली संवर्धन के द्वारा ही समाज उच्च जीवन स्तर का आनन्द उठा सकता है। इसी प्रकार देशों का विकास हुआ है। यदि संसाधनों में वृद्धि नहीं होती है तो देश अल्पविकसित ही बने रहते है। अतः अर्थव्यवस्थाओं को प्रयत्न करने चाहिये ताकि बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये उनके संसाधनों में धीरे-धीरे संवृद्धि होती रहे।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. संसाधनों के अपूर्ण उपयोग का एक उदाहरण दीजिये।
2. संसाधनों की संवृद्धि के दो उदाहरण दीजिए।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- चयन की समस्या उत्पन्न होती है, क्योंकि (अ) संसाधन दुर्लभ हैं तथा (ब) संसाधनों के अनेक वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं।
- किसी अर्थव्यवस्था को तीन आधारभूत समस्याओं का सामना करना पड़ता है, किन वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाए तथा किसके लिये उत्पादन किया जाए?
- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था वह आर्थिक प्रणाली होती है जिसमें उत्पादन के साधन निजी स्वामित्व में होते हैं तथा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से होता है।
- नियोजित आर्थिक प्रणाली में सरकार का एक केन्द्रीय नियोजन अधिकारी होता है जो क्या उत्पादन किया जाए, कैसे उत्पादन किया जाय तथा किसके लिये उत्पादन किया जाए, का निर्णय लेता है।
- मिश्रित आर्थिक प्रणाली सरकारी नियोजन को स्वतंत्र बाजार अर्थव्यवस्था से जोड़ती है।
- किसी अर्थव्यवस्था की संवृद्धि के लिये उपलब्ध संसाधनों जैसे श्रम, पूंजी तथा तकनीकी में संवृद्धि होनी चाहिये।
- यदि अर्थव्यवस्था में सभी संसाधनों को पूर्ण रोजगार मिल जाए तो केवल अन्य वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करके ही किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि की जा सकती है। ऐसा तब होता है जब उत्पादन पूर्ण कुशलता से होता है।
- यदि दुर्लभ संसाधनों का पूर्ण उपयोग नहीं होता है तो यह संसाधनों को नष्ट करना है। अतः यह सुनिश्चित करना एक अर्थव्यवस्था का कर्त्तव्य है कि दुर्लभ संसाधन बेरोजगार अथवा अल्प रोजगार में न रहें।

पाठान्त प्रश्न

प्रश्न सं. 1 तथा प्रश्न सं. 2 में ठीक उत्तर चुनिये:

1. अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं, क्योंकि :

   I. बाजार में अनेक वस्तुओं का विक्रय होता है।

   II. सरकार निर्णय लेती है।

   III. श्रम की कमी

   IV. आवश्यकताओं की बहुतायत तथा संसाधनों की दुर्लभता

2. आर्थिक व्यवहार में चयन आधारभूत होती है, क्योंकि
   I. लोगों को यह चयन करना कठिन होता है कि वे क्या चाहते हैं?
   II. लोगों की आवश्यकताओं की तुलना में संसाधन दुर्लभ हैं।
   III. लोग विवेकयुक्त व्यवहार करते हैं।
   IV. वस्तु की कीमत चयन पर निर्भर करती है।
3. दुर्लभता तथा चयन एक साथ कैसे चलते हैं? व्याख्या कीजिये।
4. ऐसा क्यों कहा जाता है कि स्वतंत्र बाजार आर्थिक प्रणाली सबसे कुशल संसाधनों के बंटबारे को सुनिश्चित करती हैं।
5. प्रत्येक की एक उपयुक्त उदाहरणसहित तीन केन्द्रीय समस्याओं की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 5.2

1. संसाधनों की दुर्लभता
2. (i) क्या उत्पादन किया जाए
   (ii) कैसे उत्पादन किया जाए
   (iii) किसके लिये उत्पादन किया जाए।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. (अ) लाभ का उद्देश्य
   (ब) जनसाधारण की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए।
2. जो इनके लिये भुगतान कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. श्रम की बेरोजगारी
2. जनसंख्या वृद्धि से कुशल तथा अकुशल श्रमिकों की संख्या में वृद्धि।